Online at: https://researchtrendsjournal.com
Indexed Journal

ISSN No: 2584-282X
Peer Reviewed Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 5; 2025; Page No. 99-102

Received: 10-07-2025
Accepted: 18-09-2025
Published: 13-10-2025

सरकारी और निजी स्कूलों के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना करना

[1]KM Bhuwaneshwari and [2]Dr. Kuldeep Singh Tomar

[1]Research Scholar, Department of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India
[2]Assistant Professor, Department of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17599295

Corresponding Author: KM Bhuwaneshwari

सारांश

स्कूल एक ऐसा विशेष वातावरण है जहाँ जीवन के कुछ गुण और कुछ प्रकार की गतिविधियों और व्यवसायों की शिक्षा इस उद्देश्य से दी जाती है कि बच्चे का विकास वांछित दिशा में हो। ये शिक्षण संस्थान मानव जीवन और मानव जीवन शिक्षा संस्थानों को प्रभावित करते हैं। शिक्षा संस्थानों या स्कूलों का समाज और समाज पर स्कूलों पर गहरा प्रभाव पड़ता है, दोनों एक दूसरे की प्रकृति को निर्धारित करते हैं। प्राथमिक शिक्षा बच्चों को पृथ्वी के प्रति बहुमुखी बनाती है, उनमें सामान्य परोपकारिता और सहयोग की भावना का निर्माण करती है। उनका शारीरिक और मानसिक विकास, भाषा, कला और संगीत आदि का विकास आत्म–अभिव्यक्ति की क्षमता को विकसित करके, उन्हें आत्मनिर्भर बनाकर, उनमें नागरिकता, गुणों का विकास करता है और उनमें नैतिकता की भावना पैदा करता है (एनईपी, 1986)। कोठारी आयोग (1964–66) ने प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्यों के संबंध में अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चे को भविष्य के जीवन की परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम बनाना है ताकि वह शारीरिक और मानसिक प्रशिक्षण इस प्रकार प्रदान कर सके कि वह ऐसा कर सके यह वास्तव में एक उपयोगी नागरिक बन सकता है।

मूलशब्द: वातावरण, विकास, भाषा, कला, संगीत, नैतिकता

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव जाति का सबसे महत्वपूर्ण आविष्कार है। शिक्षा के बिना मनुष्य अभी भी पशु के समान ही जीवन जी रहा होगा। शिक्षा ही है जिसने मनुष्य को एक मात्र "दो पैरों वाले पशु" से मानव में परिवर्तित किया है। शिक्षा शब्द हीरे के समान है जो विभिन्न कोणों से देखने पर भिन्न रंग का प्रतीत होता है। यह सामाजिक अस्तित्व के लिए सभ्यता का उतना ही आधारभूत तत्व है। किसी व्यक्ति की शिक्षा स्कूल या कॉलेज में शुरू नहीं होती; यह जन्म से बहुत पहले ही शुरू हो जाती है, अर्थात जब वह माँ के गर्भ में भ्रूण के रूप में होता है। यह विश्वविद्यालय से स्नातक होने पर नहीं, बल्कि उसकी मृत्यु पर समाप्त होती है। अतः शिक्षा एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा की अवधारणा गतिशील है। विकास की प्रक्रिया में यह अनेक युगों और चरणों से गुज़री है और प्रत्येक चरण में विद्यमान सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार इसका एक अलग अर्थ रहा है।

मानव संबंधों की एक आवश्यक और बाध्यकारी विशेषता सुसंस्कृत व्यक्ति होना है। यदि शिक्षा ऐसे व्यक्ति का निर्माण करती है, तो वह अपना कार्य बखूबी करती है। सुसंस्कृत व्यक्ति समाज के लिए एक अमूल्य संपत्ति है। शिक्षा लोगों में सामाजिक दक्षता का विकास करती है, जिसका अर्थ है सामाजिक जागरूकता, आर्थिक उत्पादकता, सांस्कृतिक और नैतिक परिष्कार। शिक्षा लोगों को जीवन के लिए उपयुक्त बनाती है। व्यक्ति का अन्य लोगों के साथ जीवन के लिए उपयुक्त होना मनुष्य को एक अच्छा विचारक, एक अच्छा कार्यकर्ता, एक अच्छा नेता और एक अच्छा साथी होना चाहिए। शिक्षा व्यक्ति को जीवन के खेल को तीन क्रीड़ास्थलों – इंद्रियों, कौशलों और आत्मा – पर बुद्धिमानी और कुशलता से खेलना सिखाती है।

यद्यपि किसी व्यक्ति की भावनाओं को दूसरे लोग प्रत्यक्ष रूप से नहीं देख सकते, लेकिन उसके प्रत्यक्ष व्यवहार और आत्मनिरीक्षण की मौखिक रिपोर्ट से उनका अनुमान लगाया जा सकता है, क्योंकि कोई भी चेतन अनुभव के रूप में भावनाओं की वास्तविकता पर संदेह नहीं कर सकता। किसी भावना को उत्पन्न करने के लिए, किसी उत्तेजक स्थिति का पिछले अनुभव से संबंध होना चाहिए और उसे भविष्य में निहितार्थों के रूप में देखा जाना चाहिए। किसी संगठन में, जब किसी कर्मचारी को किसी खतरनाक स्थिति का आभास होता है, तो वह उसे दो में से

किसी भी तरीके से संभाल सकता है। वह स्थिति को संभालने की अपनी क्षमता के प्रति आश्वस्त हो सकता है और इसे खुद को साबित करने या भय या भय का अनुभव करने के एक चुनौतीपूर्ण अवसर के रूप में देख सकता है। इस प्रकार, स्थिति और उसके बाद की भावनाओं का हमारा मूल्यांकन हमारी क्षमताओं के अपने आकलन से अत्यधिक प्रभावित होता है। उत्पन्न भावनाएँ स्वयं घटनाओं पर उतनी निर्भर नहीं करतीं, जितनी कि इस बात पर कि उनका मूल्यांकन कैसे किया जाता है।

1.1 अध्ययन का औचित्य

प्रारंभिक शिक्षा बाल जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था होती है। एक बच्चे के प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा उसके जीवन का मील का पत्थर है जिसमें वह सुंदर भवन का निर्माण करता है। बच्चे का संपूर्ण विकास इसी शिक्षा पर निर्भर करता है। संबंधित साहित्य और विभिन्न स्रोतों की समीक्षा के बाद यह देखा गया है कि प्रारंभिक शिक्षा का मूल उद्देश्य समृद्ध, संभावित, रचनात्मक और अभिनव समाज और एक विकसित राष्ट्र की नींव को मजबूत करना है। इसी कड़ी में शिक्षा का शुद्ध विकास और विकास सरकारी और निजी स्कूलों की समान जिम्मेदारी है कि वे बुनियादी शिक्षा को बढ़ावा दें। अन्वेषक अंततः विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि विभिन्न स्तरों पर सरकारी और निजी विद्यालयों में निम्नलिखित पहलू पर बहुत अधिक अंतर है अर्थात बुनियादी ढांचागत सुविधाएं, शिक्षक योग्यता, शिक्षण पद्धति, पाठ्यक्रम, सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ सरकारी और निजी स्कूलों के बारे में छात्रों के प्रदर्शन और अभिभावकों के विचार। उत्तराखंड में प्रारंभिक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर कुछ अध्ययन किए गए हैं लेकिन वर्तमान विषय से संबंधित कोई अध्ययन नहीं किया गया है। इन्हीं कारणों से अन्वेषक ने उत्तराखण्ड राज्य के प्रारंभिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों की स्थिति का विश्लेषण करने के लिए तुलनात्मक अध्ययन करने की योजना बनाई।

2. अध्ययन का उद्देश्य

1. स्तर पर सरकारी और निजी स्कूलों की स्थिति का अध्ययन करना।
2. स्तर पर सरकारी और निजी स्कूलों की नामांकन स्थिति की तुलना करना।
3. स्तर पर सरकारी और निजी स्कूलों के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना करना।

3. साहित्य की समीक्षा

कौशल (2017) ने स्तर पर सरकारी और निजी स्कूलों में शैक्षणिक गुणवत्ता की तुलना की। अध्ययन के परिणामों से पता चला कि करके सीखने की भूमिका का हमेशा पूरी तरह से पता नहीं लगाया गया था। गुणवत्ता सुधार के भीतर कक्षा अवलोकन के लिए रणनीतियों ने कोई संदर्भ नहीं दिया। कर्मचारियों की शैक्षणिक योग्यता मानक के अनुरूप नहीं थी। स्टाफ की जिम्मेदारियों, कर्मचारियों के विकास, गुणवत्ता में सुधार और मार्गदर्शन का कोई व्यापक आवंटन नहीं था। केवल कुछ स्कूलों ने छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के अवसर पैदा किए थे। छात्रों को उन जरूरतों के जवाब में सीखने का समर्थन मिला, जिन्हें उन्होंने या उनके शिक्षकों ने पहचाना था। कुल नमूने में आधे से अधिक स्कूलों ने वर्तमान पाठ्यक्रम का ऑडिट किया था ताकि यह पता लगाया जा सके कि एक अच्छे छात्र के निर्माण की आवश्यकता कहाँ है। तथापि, कुल मिलाकर गुणवत्ता सुनिश्चित करने में अपर्याप्त प्रगति हुई। स्कूलों ने अच्छी तरह से सुसज्जित प्रयोगशाला और अद्यतन पुस्तकालय का थोड़ा उपयोग प्रदान किया था। जिन विद्यालयों का दौरा किया गया उनमें से अधिकांश में छात्रों के मूल्यांकन के लिए एक विकसित प्रणाली थी और मार्गदर्शन के माध्यम से सभी आवश्यकताओं और नियमित समीक्षा को पूरा किया। जिन विद्यालयों का दौरा किया गया, उनमें से अधिकतम छात्रों में शिक्षकों के दृष्टिकोण, शिक्षण विधियों और उनकी सहकारी प्रकृति के प्रति सीखने के सकारात्मक विचार थे। लगभग सभी विद्यालयों में भवन एवं अन्य भौतिक सुविधाओं तथा स्टाफ विकास कार्यक्रमों की ओर कम से कम ध्यान दिया गया। शिक्षकों और छात्रों, शिक्षकों और प्राचार्य के बीच बातचीत बराबर थी।

दीक्षित एवं गर्ग (2017) ने सरकारी एवं निजी स्कूल के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं शैक्षणिक समायोजन का विश्लेषण किया। इस अध्ययन के परिणामों से पता चला कि सरकारी और निजी स्कूल के छात्र शैक्षणिक उपलब्धि और शैक्षणिक समायोजन पर भिन्न होते हैं। निजी स्कूल के छात्रों में सरकारी स्कूल के छात्रों की तुलना में बेहतर शैक्षणिक उपलब्धि और शैक्षणिक समायोजन था।

फारूक (2017) ने अपने अध्ययन में बताया कि स्कूल का अमित्र वातावरण, सीखने में अप्रभावित कठिनाइयाँ और सह–पाठयक्रम गतिविधियों की कमी छात्रों के स्कूल छोड़ने का कारण बनती है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों का नामांकन बढ़ाने के लिए स्कूलों में साफ–सुथरी साफ–सुथरी कक्षाएं, खेल सामग्री के साथ खेल के मैदान की सुविधा, प्रयोगशालाएं, शिक्षण शिक्षण सामग्री और स्कूलों में दयालु और कुशल शिक्षकों की आवश्यकता है।

4 अध्ययन पद्धतिः

वर्तमान अध्ययन शिक्षकों के संदर्भ में सरकारी और निजी स्कूलों की स्थिति, बुनियादी सुविधाओं, छात्रों के नामांकन और उनकी शैक्षणिक उपलब्धि, सह–पाठयक्रम गतिविधियों, माता–पिता शिक्षक बैठक, मूल्यांकन पैटर्न, द्वारा अपनाई गई शिक्षण रणनीतियों का अध्ययन करने के लिए किया गया था। रुद्रप्रयाग के सरकारी और निजी विद्यालयों के बारे में शिक्षकों और अभिभावकों के विचार।

इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु इस क्षेत्र में अब तक किए गए शोध अध्ययनों के आधार पर एक उपयुक्त रूपरेखा की पहचान की गई है। शोधों का अध्ययन करने के बाद, शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि मानक सर्वेक्षण पद्धति इस अध्ययन के लिए सबसे उपयुक्त है। मानक सर्वेक्षण पद्धति में व्यक्तियों के समूह की प्रकृति, वस्तुओं की संख्या से संबंधित तथ्यों या वर्तमान परिस्थितियों का प्रस्तुतीकरण शामिल है। घटनाओं के वर्ग में आगमन, विश्लेषण, वर्गीकरण, गणना और मापन की प्रक्रिया शामिल है। इस वर्तमान शोध में उन सभी चरणों और विशेषताओं को अपनाया गया है जिन्हें कई लेखकों द्वारा मानक सर्वेक्षण पद्धति के लिए आवश्यक बताया गया है।

4.1 जनसंख्या

शैक्षिक शोधकर्ता के लिए रुचिकर जनसंख्या, सामान्यतः परिमित जनसंख्या होती है जिसे उसमें निहित तत्वों के साथ संयुक्त रूप से परिभाषित किया जा सकता है। इसलिए, शैक्षिक अनुसंधान में जनसंख्या आमतौर पर तत्वों की सीमित संख्या का समुच्चय होती है और ये तत्व मूल इकाइयाँ होती हैं जो एक परिभाषित जनसंख्या का निर्माण करती हैं।

सर्वेक्षण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व नमूने द्वारा किया जाता है, लेकिन इस जनसंख्या का सटीक वर्णन करना कठिन हो सकता है। इसलिए, परिभाषित लक्ष्य जनसंख्या के बारे में लिखना आसान है। परिभाषित लक्ष्य जनसंख्या एक संक्रियात्मक परिभाषा

प्रदान करती है, जिसका उपयोग जनसंख्या तत्वों की सूची या नमूना ढाँचे के निर्माण में मार्गदर्शन के लिए किया जाता है जिससे नमूना लिया जा सकता है। तत्वों को परिभाषित लक्ष्य जनसंख्या से बाहर रखा जाता है और उन्हें बहिष्कृत जनसंख्या कहा जाता है।

वर्तमान अध्ययन के लिए जनसंख्या को रुद्रप्रयाग क्षेत्र के सरकारी और निजी विद्यालयों के शहरी और ग्रामीण दोनों छात्रों (लड़के और लड़कियां) के रूप में परिभाषित किया गया है,

4.2 नमूनाकरण

चूँकि धन, समय और ऊर्जा की कमी के कारण रुद्रप्रयाग क्षेत्र के सभी सरकारी और निजी विद्यालयों को अध्ययन में शामिल नहीं किया जा सका, इसलिए संस्थान की जनसंख्या से एक प्रतिनिधि नमूना यादृच्छिक रूप से लिया गया है। इस उद्देश्य के लिए, पहले चरण में क्लस्टर सैंपलिंग का उपयोग किया जाता है। धन, समय और ऊर्जा की बचत के लिए रुद्रप्रयाग में स्थित विद्यालयों का चयन किया जाता है। सरकारी और निजी विद्यालयों का नमूना लेने का पहला कार्य रुद्रप्रयाग क्षेत्र के इन विद्यालयों की सूची प्राप्त करना है। इन विद्यालयों की सूची संबंधित जिलों के जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय से ली गई है।

हमने रुद्रप्रयाग जिलें क्षेत्र के 40 स्कूलों को चुना। इसके अलावा, हमने सरकारी स्कूलों से चार और निजी स्कूलों से चार स्कूल चुने, जिनमें से दो शहरी क्षेत्र से और दो ग्रामीण क्षेत्र से थे।

हमने रुद्रप्रयाग क्षेत्र के जिलें से 400 छात्रों को लिया, इसमें 40 छात्र सरकारी और 40 छात्र निजी विद्यालयों से थे, जिनमें ग्रामीण क्षेत्र से बीस छात्र और शहरी क्षेत्र से बीस छात्र थे, जिनमें क्रमशः दस लड़के और दस लड़कियाँ शामिल थीं।

4.3 आँकड़ों का विश्लेषण

पिछले अध्याय, अर्थात् अनुसंधान अभिकल्प, में शोध का विस्तृत विवरण, अध्ययन में प्रयुक्त कार्यप्रणाली पर चर्चा की गई थी। अधिक सटीक रूप से, इसमें अध्ययन में प्रयुक्त शोध पद्धति, अध्ययन में प्रयुक्त जनसंख्या प्रतिदर्श और प्रतिचयन पद्धति, अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण और अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों का विवरण शामिल था।

वर्तमान अध्याय, अर्थात् आँकड़ों का विश्लेषण, में सांख्यिकीय रूप से विश्लेषित आँकड़ों को सारणीबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1: सरकारी विद्यालय और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के गृह शिक्षण वातावरण के नियंत्रण आयाम की तुलना

क्रमांक	समूह का नाम	छ	एच.एल.ई. स्कोर का माध्य	एस.डी.	टी–मान	महत्व स्तर
1.	सरकारी विद्यालय	300	20.235	4.475	3.797	**
2.	निजी विद्यालय	300	18.730	3.374		

''.01 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 1 से पता चलता है कि सरकारी विद्यालयों के गृह–शिक्षण वातावरण (भ्.ऋ.म्.) स्कोर का माध्य 20.235 और मानक विचलन 4.475 था, जबकि निजी विद्यालयों के गृह–शिक्षण वातावरण (भ्.ऋ.म्.) स्कोर का माध्य 18.73 और मानक विचलन 3. 374 था। दोनों माध्यों के बीच सार्थकता अंतर की गणना करने पर 'ज' मान 3.797 पाया गया। यह मान .01 स्तर पर सार्थक था।

तालिका 2: सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के गृह–शिक्षण वातावरण के सुरक्षात्मक आयाम की तुलना

क्रमांक	समूह का नाम	छ	एच.एल.ई. स्कोर का माध्य	एस.डी.	टी–मान	महत्व स्तर
1.	सरकारी विद्यालय	300	21.980	4.685	3.803	**
2.	निजी विद्यालय	300	20.115	5.115		

''.01 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 2 से पता चलता है कि सरकारी विद्यालयों के उच्च शिक्षा स्तर (भ्.ऋ.म्.) स्कोर का माध्य 21.980 और मानक विचलन 4.685 था, जबकि निजी विद्यालयों के उच्च शिक्षा स्तर (भ्.ऋ.म्.) स्कोर का माध्य 20.115 और मानक विचलन 5.115 था और दोनों माध्यों के बीच सार्थकता अंतर की गणना के बाद 'ज' मान 3.803 पाया गया। यह मान .01 स्तर पर सार्थक था।

तालिका 3: सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के गृह शिक्षण वातावरण के दंडात्मक आयाम की तुलना

क्रमांक	समूह का नाम	छ	एच.एल.ई. स्कोर का माध्य	एस.डी.	टी–मान	महत्व स्तर
1.	सरकारी विद्यालय	300	22.560	5.262	3.911	**
2.	निजी विद्यालय	300	20.480	5.374		

''.01 स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 3 से पता चलता है कि सरकारी विद्यालयों के उच्च शिक्षा स्तर (भ्.ऋ.म्.) स्कोर का माध्य 22.560 और मानक विचलन 5.262 था, जबकि निजी विद्यालयों के उच्च शिक्षा स्तर (भ्.ऋ.म्.) स्कोर का माध्य 20.480 और मानक विचलन 5.374 था। दोनों माध्यों के बीच सार्थकता अंतर की गणना करने पर 'ज' मान 3.911 पाया गया। यह मान .01 स्तर पर सार्थक था।

तालिका 4: सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के गृह शिक्षण वातावरण के अनुरूपता आयाम की तुलना

क्रमांक	समूह का नाम	छ	एच.एल.ई. स्कोर का माध्य	एस. डी.	टी–मान	महत्व स्तर
1.	सरकारी विद्यालय	300	20.815	4.830	1.748	#
2.	निजी विद्यालय	300	20.950	5.062		

ü.01 स्तर पर महत्वहीन

तालिका संख्या 4 से पता चलता है कि सरकारी विद्यालयों के उच्च शिक्षा स्तर (भ्.ऋ.म्.) स्कोर का माध्य 20.815 और मानक विचलन 4.830 था, जबकि निजी विद्यालयों के उच्च शिक्षा स्तर (भ्.ऋ.म्.) स्कोर का माध्य 20.950 और मानक विचलन 5.062 था और दोनों माध्यों के बीच सार्थकता अंतर की गणना के बाद 'ज' मान 1.748 पाया गया। यह मान महत्वहीन था।

तालिका 5: सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के गृह शिक्षण वातावरण के सामाजिक अलगाव आयाम की तुलना

क्रमांक	समूह का नाम	छ	एच.एल.ई. स्कोर का माध्य	एस. डी.	टी–मान	महत्व स्तर
1.	सरकारी विद्यालय	300	20.430	5.667	1.817	#
2.	निजी विद्यालय	300	19.485	4.687		

üअर्थहीन

तालिका संख्या 5 से पता चलता है कि सरकारी विद्यालयों के उच्च शिक्षा स्तर (भ.स.भ.) स्कोर का माध्य 20.430 और ै.क. 5.667 था, जबकि निजी विद्यालयों के उच्च शिक्षा स्तर (भ.स.भ.) स्कोर का माध्य 19.485 और ै.क. 4.687 था। दोनों माध्यों के बीच सार्थकता अंतर की गणना करने पर 'ज' मान 1.817 पाया गया। यह मान अर्थहीन था।

तालिका 6: सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के गृह–शिक्षण वातावरण के पुरस्कार आयाम की तुलना

क्रमांक	समूह का नाम	छ	एच.एल.ई. स्कोर का माध्य	एस. डी.	टी–मान	महत्व स्तर
1.	सरकारी विद्यालय	300	21.870	5.715	1.837	#
2.	निजी विद्यालय	300	20.830	5.609		

तालिका संख्या 6 से पता चलता है कि सरकारी विद्यालयों के एच.एल.ई. स्कोर का माध्य 21.870 और एस.डी. 5.715 था, जबकि निजी विद्यालयों के एच.एल.ई. स्कोर का माध्य 20.830 और एस.डी. 5.609 था और दोनों माध्यों के बीच सार्थकता अंतर की गणना के बाद 'ज' मान 1.817 पाया गया। यह मान नगण्य था।

5. निष्कर्ष

सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं की कुल शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना के संबंध में विश्लेषित आंकड़े प्रदर्शित किए गए हैं। प्राप्त टी–मान 9.044 विश्वास के .01 स्तर पर सार्थक है जो दर्शाता है कि दो समूह अर्थात् सरकारी विद्यालयों की छात्राएं और निजी विद्यालयों की छात्राएं अपनी कुल शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक रूप से भिन्न हैं। तालिका से स्पष्ट है कि निजी विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं की कुल शैक्षणिक उपलब्धि सरकारी विद्यालयों की छात्राओं से बेहतर है। यह यह भी दर्शाता है कि निजी विद्यालयों की छात्राओं की कुल शैक्षणिक उपलब्धि सरकारी विद्यालयों की छात्राओं से अधिक है। चूंकि टी–मान विश्वास के .01 स्तर पर सार्थक है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि, यदि एक मामले में एक ही जनसंख्या से सौ नमूने लिए जाते हैं, तो परिणाम वर्तमान से भिन्न होगा। प्राप्त ज–मान 6.382, .01 विश्वास स्तर पर सार्थक है, जो दर्शाता है कि दो समूह, अर्थात् सरकारी विद्यालयों की छात्राएँ और निजी विद्यालयों की छात्राएँ, अपनी शैक्षिक जागरूकता में सार्थक रूप से भिन्न हैं। तालिका से स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं की शैक्षिक जागरूकता, सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं से बेहतर है। यह यह भी दर्शाता है कि निजी विद्यालयों की छात्राओं में सरकारी विद्यालयों की छात्राओं की तुलना में अधिक शैक्षिक जागरूकता है। चूँकि ज–मान, .01 विश्वास स्तर पर सार्थक है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि यदि एक ही मामले में एक ही जनसंख्या से सौ नमूने लिए जाएँ, तो परिणाम वर्तमान से भिन्न होगा।

6. सन्दर्भ

1. आनु, ई. एम. और ओलाटोये, आर. ए. जूनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों द्वारा पुस्तकालय संसाधनों का उपयोग, अध्ययन की आदत और विज्ञान की उपलब्धि। शैक्षिक अनुसंधान. 2011;2(7):1265–1269.
2. अबदुल–मजीद, एस. त्रिनिदाद के तीन प्राथमिक विद्यालयों में छोटे बच्चों के सामाजिक विकास में सामाजिक क्षमता और शिक्षक की भूमिकाएँ, कैरिबियन पाठ्यक्रम. 2010;17:85–114.
3. अबर, बी., कार्टर, के. एल. और विंसलर, ए. मातृ पालन–पोषण शैली और किशोरों पर प्रभाव। अमेरिकन जर्नल ऑफ ऑर्थोसाइकियाट्री. 2009;76(4):503-511.
4. अब्बासीफर्ड एम, बहरामी एच. और अहगर, जी. पूर्व–विश्वविद्यालयी छात्राओं की आत्म–प्रभावकारिता और उनकी उपलब्धि प्रेरणाओं के बीच संबंध पर एक अध्ययन। अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान. 2010;13:95–110.
5. अब्दोलघासेमी ए. और जावनमीरी एल. छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धियों के पूर्वानुमान में सामाजिक वांछनीयता, मानसिक स्वास्थ्य और आत्म–प्रभावकारिता की भूमिका। विद्यालय मनोविज्ञान, 2012, 6–20.
6. अब्दुल करीम ए. वाई. नाइजीरिया में शिक्षा के ऐतिहासिक आधार के लिए एक मार्गदर्शिका, इलोरिन, केवुलेरे प्रेस, 1990.
7. अब्दुल रहीम यूसुफ, अयोरिंडे सैमुअल अगबोना और हमदलात ताइवो यूसुफ. इलोरिन अमीरात में सामाजिक अध्ययन में जूनियर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के प्रदर्शन पर पालन–पोषण शैलियों का प्रभाव. कला एवं सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, लोरिन विश्वविद्यालय, लोरिन, 2009.
8. अब्दुल्लाही, ओ. एफ. क्वारा राज्य माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की अंग्रेजी भाषा में अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययनः परामर्श के लिए इसका निहितार्थ. इलोरिन जर्नल ऑफ एजुकेशन, 1995;15:32–45.
9. आबिद हुसैन, माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के अध्ययन दृष्टिकोण, अध्ययन आदतों और शैक्षणिक उपलब्धि पर मार्गदर्शन सेवाओं का प्रभाव। शिक्षा एवं अनुसंधान बुलेटिन. 2006;28(1):35–45.
10. अबरोल, डी. एन. बुद्धि, सामयिक रुचियों, उपलब्धि, लिंग और सामाजिक–आर्थिक स्थिति के संबंध में उपलब्धि प्रेरणा का एक अध्ययन, शैक्षिक अनुसंधान का तृतीय सर्वेक्षण, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या, 1997, 317.
11. अबूबकर, आर.बी. और अडेगबॉयेगा, बी.आई. महाविद्यालय गणित में शैक्षणिक उपलब्धियों के निर्धारक के रूप में आयु और लिंग, एशियन जर्नल ऑफ नेचुरल एंड एप्लाइड साइंसेज. 2012;1(2):121–127.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.